दो सिर वाला जुलाहा

एक बार मन्थरक नाम के जुलाहे के सब उपकरण, जो कपडा बुनने के काम आते थे, टूट गये। उपकरणो को फिर बनाने के लिये लकडी की जरुरत थी । लकडी काटने की कुल्हाडी लेकर वह समुद्रतट पर स्थित वन की ओर चल दिया। समुद्र के किनारे पहुँचकर उसने एक वृक्ष देखा और सोचा कि इसकी लकडी से उसके सब उपकरण बन जायेगे। यह सोच कर वृक्ष के तने मे वह कुल्हाडी मारने को ही था कि वृक्ष की शाखा पर बैठे हुए एक देव ने उसे कहा- "मैं इस वृक्ष पर आनन्द से रहता हूँ, और समुद्र की शीतल हवा का आनन्द लेता हूँ। तुम्हे इस वृक्ष को काटना उचित नही। दूसरे के सुख को छीनने वाला कभी सुखी नहीं होता।"

जुलाहे ने कहा- "मैं भी लाचार हूँ। लकडी के बिना मेरे उपकरन नही बनेगे, कपडा नही बुना जायगा, जिससे मेरे कुटुम्बी भूखे मर जायेगे। इसलिये अच्छा यही है कि तुम किसी और वृक्ष का आश्रय लो, मैं इस वृक्ष की शाखाये काटने को विवश हूँ।"

देव ने कह -"मन्थरक ! मैं तुम्हारे उत्तर से प्रसन्न हूँ। तुम कोई भी एक वर माँग लो, मैं उसे पूरा करुँगा, केवल इस वृक्ष को मत काटो।"

मन्थरक बोला-"यदि यही बात है तो मुझे कुछ देर का अवकाश दो। मैं अभी घर जाकर अपनी पत्नी से और मित्र से सलाह करके तुम से वर मांगूंगा।"

देव ने कहा- "मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करुँगा।"

गाँव में पहुँचने के बाद मन्थरक की भेंट अपने एक मित्र नाई से हो गई। उसने उससे पूछा-"मित्र ! एक देव मुझे वरदान दे रहा है, मैं तुझ से पूछने आया हूँ कि कौन सा वरदान माँगा जाए।"

नाई ने कहा- "यदि ऐसा ही है तो राज्य मांग ले। मैं तेरा मन्त्री बन जाऊंगा, हम सुख से रहेंगे।"

तब, मन्थरक ने अपनी पत्नी से सलाह लेने के बाद वरदान का निश्चय करने की बात नाई से कही। नाई ने स्त्रियों के साथ ऐसी मन्त्रणा करना नीति-विरुद्ध बतलाया। उसने सम्मति दी कि "स्त्रिया प्रायः स्वार्थपरायणा होती है। अपने सुख-साधन के अतिरिक्त उन्हे कुछ भी सूझ नही सकता। अपने पुत्र को भी जब

वह प्यार करती है, तो भविष्य मे उसके द्वारा सुख की कामनाओ से ही करती है।"
मन्थरक ने फिर भी पत्नी से सलाह किये बिना कुछ भी न करने का विचार प्रकट किया। घर पहुँचकर वह पत्नी से बोला- "आज मुझे एक देव मिला है। वह एक वरदान देने को उद्यत है। नाई की सलाह है कि राज्य मांग लिया जाय। तू बता कि कौन सी चीज़ मांगी जाये।"
पत्नी ने उत्तर दिया- "राज्य-शासन का काम बहुत कष्ट-प्रद है। सन्धि-विग्रह आदि से ही राजा को अवकाश नही मिलता। राजमुकुट प्रायः कांटो का ताज होता है। ऐसे राज्य से क्या अभिप्राय जो सुख न दे।"
मन्थरक ने कहा- "प्रिय ! तुम्हारी बात सच है, राजा राम को और राजा नल को भी राज्य-प्राप्ति के बाद कोई सुख नही मिला था। हमे भी कैसे मिल सकता है किन्तु प्रश्न यह है कि राज्य न मांग जाय तो क्या मांगा जाये।"
मन्थरक-पत्नी ने उत्तर दिया- "तुम अकेले दो हाथो से जितना कपडा बुनते हो, उससे भी हमारा व्यय पूरा हो जाता है। यदि तुम्हारे हाथ दो की जगह चार हो और सिर भी एक की जगह दो हो तो कितना अच्छा हो। तब हमारे पास आज की अपेक्षा दुगना कपडा हो जायगा। इससे समाज मे हमारा मान बढेगा।"

मन्थरक को पत्नी की बात जच गई। समुद्रतट पर जाकर वह देव से बोला- "यदि आप वर देना ही चाहते है तो यह वर दो कि मैं चार हाथ और दो सिर वाला हो जाऊँ।"
मन्थरक के कहने के साथ ही उसका मनोरथ पूरा हो गया। उसके दो सिर और चार हाथ हो गये। किन्तु इस बदली हालत में जब वह गाँव मे आया तो लोगो ने उसे राक्षस समझ लिया, और राक्षस-राक्षस कहकर सब उसपर टूट पडे। लोगो ने पत्थरो से इतना मारा कि वह वही मर गया।

सीख : मित्र की शिक्षा मानो ।

यह कथा सुनकर सुवर्णसिद्धि ने कहा, “इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि अगर अपने पास बुद्धि न हो तो मित्रो की सलाह ही मान लेनी चाहिए।"

चक्रधर ने कहा, “ठीक ही कहते हैं। असंभव की आशा और अनागत की चिंता मे डूबे रहनेवालो की दशा काल्पनिक सोमशर्मा के पिता जैसी होती है।"

सुवर्णसिद्धि ने पूछा, "वह कौन था?"

चक्रधर ने बताया--

ब्राह्मण का सपना

दो सिर वाला जुलाहा

एक बार मन्थरक नाम के जुलाहे के सब उपकरण, जो कपड़ा बुनने के काम आते थे, टूट गये। उपकरणों को फिर बनाने के लिये लकड़ी की जरूरत थी। लकड़ी काटने की कुल्हाड़ी लेकर वह समुद्रतट पर स्थित वन की ओर चल दिया। समुद्र के किनारे पहुँचकर उसने एक वृक्ष देखा और सोचा कि इसकी लकड़ी से उसके सब उपकरण बन जायेंगे। यह सोच कर वृक्ष के तने में वह कुल्हाड़ी मारने को ही था कि वृक्ष की शाखा पर बैठे हुए एक देव ने उसे कहा- "मैं इस वृक्ष पर सुख से रहता हूँ, और समुद्र की शीतल हवा का आनन्द लेता हूँ। तुम्हें इस वृक्ष को काटना उचित नहीं। दूसरे के सुख को छीनने वाला कभी सुखी नहीं होता।"
जुलाहे ने कहा- "मैं भी लाचार हूँ। लकड़ी के बिना मेरे उपकरण नहीं बनेंगे, कपड़ा नहीं बुना जायेगा, जिससे मेरे कुटुम्बी भूखे मर जायेंगे। इसलिये अच्छा यही है कि तुम किसी और वृक्ष का आश्रय लो, मैं इस वृक्ष की शाखायें काटने को विवश हूँ।"
देव ने कहा- "मन्थरक! मैं तुम्हारे उत्तर से प्रसन्न हूँ। तुम कोई भी एक वर माँग लो, मैं उसे पूरा करूँगा, केवल इस वृक्ष को मत काटो।"
मन्थरक बोला- "यदि यही बात है तो मुझे कुछ देर का अवकाश दो। मैं अभी घर जाकर अपनी पत्नी से और मित्र से सलाह करके तुमसे वर माँगूँगा।"
देव ने कहा- "मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।"
गाँव में पहुँचने के बाद मन्थरक की भेंट अपने एक मित्र नाई से हो गई। उसने उससे पूछा- "मित्र! एक देव मुझे वरदान दे रहा है, मैं तुमसे पूछने आया हूँ कि कौन सा वरदान माँगा जाए।"
नाई ने कहा- "यदि ऐसा ही है तो राज्य माँग लो। मैं तेरा मंत्री बन जाऊँगा, हम सुख से रहेंगे।"
तब, मन्थरक ने अपनी पत्नी से सलाह लेने के बाद वरदान का निश्चय करने की बात नाई से कही। नाई ने स्त्रियों के साथ ऐसी मन्त्रणा करना नीति-विरुद्ध बतलाया। उसने सम्मति दी कि "स्त्रियाँ प्रायः स्वार्थपरायण होती हैं। अपने सुख-साधन के अतिरिक्त उन्हें कुछ भी सूझ नहीं सकता। अपने पुत्र को भी जब वह प्यार करती है, तो भविष्य में उसके द्वारा सुख की कामना से ही करती है।"
मन्थरक ने फिर भी पत्नी से सलाह किये बिना कुछ भी न करने का विचार प्रकट किया। घर पहुँचकर वह पत्नी से बोला- "आज मुझे एक देव मिला है। वह एक वरदान देने को उद्यत है। नाई की सलाह है कि राज्य माँग लिया जाए। तुम बताओ कि कौन सी चीज माँगी जाए।"
पत्नी ने उत्तर दिया- "राज्य-शासन का काम बहुत कष्टप्रद है। सन्धि-विग्रह आदि से ही राजा को अवकाश नहीं मिलता। राजमुकुट प्रायः काँटों का ताज होता है। ऐसे राज्य से क्या अभिप्राय जो सुख न दे।"
मन्थरक ने कहा- "प्रिये! तुम्हारी बात सच है, राजा राम को और राजा नल को भी राज्य-प्राप्ति के बाद कोई सुख नहीं मिला था। हमें ही कैसे मिल सकता है किन्तु प्रश्न यह है कि राज्य न माँगें तो क्या माँगा जाए।"
मन्थरक-पत्नी ने उत्तर दिया- "तुम अकेले दो हाथों से जितना कपड़ा बुनते हो, उससे भी हमारा सब खर्च पूरा हो जाता है। यदि तुम्हारे हाथ दो की जगह चार हों और सिर भी एक की जगह दो हों तो कितना अच्छा हो। तब हमारे पास आज की अपेक्षा दुगना कपड़ा हो जायेगा। इससे समाज में हमारा मान बढ़ेगा।"

भनरुक क पेड़ों नी की गाउ एप्प गाईं। मभम्रुए पर एकर वह दवे म गेलो- "यदि तुप वर दनो श्री ममहरु हउ येह वर द कि भमिर हाथ उगर द भिर बाला हएउ।"
भनरुक क कहन के साथ ही उसका भनरोध पूरा ह गेया। उसक द भिर उगर मार हाथ ह गेया। किन्तु उस ग्दली हालउ भम्ेग वह गावें भमुया उ लेगो ने उस राक्षस मभाए लिया, उगर राक्षस-राक्षस कहकर मग उसपर एए पत्तालगों ने पेतु भ उतना भारा कि वह वही भर गया।

भीप : भित्र की मिक्षा भानें।

यह कथा मनुकर मवर्लमिम्नि न कहा, “उसीलिए तो मैं कहता हूँ कि मगर मपन पाम ग्म्नि न हो तो भित्र की मलाह भी भान लेनी चाहिए।"

ग्रक्रणर न कहा, “ठीक ही कहते हो। मिमंतव की मुमा उगर मनागत की ममिंत भ र्दवु रहनवाल की दमा काल ग्रिक मभेमग्ग्म क पिउ एसी हउी ह।"

मवर्लमिम्नि न पूछा, "वह कौन था?"

ग्रक्रणर न बताया--

ग्ङ्ग्म्' का सपना

मनुवाद - उर्मिल्ला पिल्लै